जनसंख्या वितरण एवं घनत्व विकास खण्ड–अकबरपुर, जनपद–अम्बेडकरनगर

डॉ0 मनोज कुमार दीक्षित*

जनसंख्या अध्ययन में जनसंख्या वितरण का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जनसंख्या वितरण के प्रतिरूप से मालूम होता है कि मानव क्षेत्र के भौतिक संसाधनों का कितना उपयोग कर वातावरण में संयोजन या संशोधन किया है और किन क्षेत्रों को निवास के लिए चुना गया है और किसी स्थान का परित्याग क्यों किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र अकबरपुर में जनसंख्या वितरण का अध्ययन दों भागों में किया गया है–

1. सामान्य जनसंख्या वितरण
2. गॉव के आधार पर जनसंख्या का वितरण

1.सामान्य जनसंख्या वितरण :–वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या (वर्ष 2001) 326472 है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार सबसे अधिक जनसंख्या 28348 न्याय पंचायत सदरपुर में है तथा सबसे कम जनसंख्या 12364 न्याय पंचायत बरियावन में है। अध्ययन क्षेत्र समतल मैदानी क्षेत्र है। अध्ययन क्षेत्र में विरल जनसंख्या बरियावन, सतरही, सोनगॉव आदि न्याय पंचायतों में हैं साथ चन्दनपुर, जल्लापुर, मसौढ़ा आदि न्याय पंचायतों में जनसंख्या वितरण सामान्य है। सदरपुर, लालापुर, ताराखुर्द, बेवाना, अफजलपुर आदि न्याय पंचायतों में जनसंख्या वितरण अधिक सघन है क्योंकि यहॉ भूमि अधिक समतल और उपजाऊ है। अकबरपुर एक विकसित बाजार है जहॉ पर स्वास्थ्य केन्द्र, ब्लाक तथा थाना, तहसील, दूरसंचार, डाकघर, रेल एवं सड़क मार्ग उपलब्ध है इसी कारण इस क्षेत्र की जनसंख्या अधिक है।

तालिका संख्या 1

विकास खण्ड अकबरपुर में न्याय पंचायतवार जनसंख्या का वितरण

क्र0सं0	न्याय पंचायत	कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री
1.	लालापुर	20950	4660	4390
2.	चॉदपुर भटपुरवा	15271	7763	7508
3.	अरिया	21243	10582	10661
4.	सतरही	13784	7084	6700
5.	रामनगर नरसिंहपुर	12630	4209	42086
6.	अफजलपुर	21387	11124	10263
7.	सदरपुर	28348	14670	13678
8.	बहौरिकपुर	13840	6931	6909
9.	सोनगॉव	15989	8179	7810
10.	रामपुर सकरवारी	15404	7746	7658
11.	कुरकी	17807	8826	8981
12.	बेवाना	20476	10331	10145
13.	चन्दनपुर	16480	8400	8080
14.	सैदापुर	23076	11573	11503
15.	जल्लापुर मसेढ़ा	16331	6188	10143
16.	बरियावन	12364	6312	6052
17.	नैली	17255	8642	8613
18.	ताराखुर्द	23867	11961	11906
	योग :–	326472	165127	161345

स्रोत– तहसील कार्यालय, अम्बेडकरनगर– 2005

2.गॉव के आधार पर जनसंख्या का वितरण :–वर्ष 2001 में शोध क्षेत्र अकबरपुर में विभिन्न आकार वाले गॉवों के आधार पर जनसंख्या वितरण को तालिका संख्या 2.2 में प्रदर्शित किया गया है। निम्न तालिका से स्पष्ट होता है कि 200 से 499 जनसंख्या वाले गॉवों की संख्या 66 है, जिसमें 29.07 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है तथा 500 से 1499 जनसंख्या वाले गॉवों की संख्या 108 है, जिसमें 47. 57 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है और उच्च जनसंख्या वाले दो गॉव है, जिसमें 0.88 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

तालिका संख्या 2.2

विकास खण्ड अकबरपुर–गॉवों की जनसंख्या का वितरण 2001

क्र0सं0	गॉवों की श्रेणी	जनसंख्या का आकार	गॉवों की संख्या	प्रतिशत
1.	न्यून जनसंख्या युक्त गॉव	200–499	66	29.07
2.	सामान्य जनसंख्या युक्त गाव	500–1499	108	47.57
3.	उच्च जनसंख्या युक्त गॉव	1500–4999	51	22.48
4.	अति उच्च जनसंख्या युक्त गाव	Above 5000	2	0.88
	योग		227	100

स्रोत– तहसील कार्यालय, अम्बेडकरनगर– 2005

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले तत्व :–

पृथ्वी तल पर जनसंख्या के वितरण व घनत्व में विशमता पायी जाती है। जनसंख्या की इस असमान वितरण के लिए भौतिक एवं मानवीय कारक उत्तरदायी हैं। अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या का वितरण लगभग एक समान नहीं है। कहीं जनसंख्या का वितरण अधिक है तो कहीं कम जनसंख्या निवास करती है। इसको प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं–

1.भौगोलिक कारक :–भौगोलिक कारक अत्यन्त प्रभावशाली और व्यापक होते हैं। इसके अन्तर्गत स्थिति एवं विस्तार, जलवायु, जल मिट्टी, वनस्पति, खनिज आदि सम्मिलित हैं। अध्ययन क्षेत्र में इसके प्रभाव का विश्लेषण निम्न रूपों में है–

(क) स्थिति एवं विस्तार : किसी भी क्षेत्र का स्थिति एवं विस्तार उस क्षेत्र की जनसंख्या को सरलता से प्रभावित करता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र गंगा, घाघरा के बीच में स्थित है। यह क्षेत्र अवध क्षेत्र के अन्तर्गत फैजाबाद मण्डल

में स्थित है। यहॉ की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक स्थिति महत्वपूर्ण है। अध्ययन क्षेत्र की स्थिति एवं विस्तार सघन और लगभग एक समान जनसंख्या वितरण का महत्वपूर्ण कारक है।

(ख) धरातल : किसी भी क्षेत्र की धरातलीय बनावट जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करती है। पहाड़, पठार, ऊँचाई वाले स्थानों पर जनसंख्या विरल पायी जाती है जिसमें विषम धरातल, अनुपजाऊ मिट्टी एवं कठोर जलवायु प्रमुख कारण है। जबकि मैदानी क्षेत्रों में जीवन निर्वाह की सुविधा सबसे अधिक पायी जाती है। भूपटल समतल व सपाट होने के कारण आवागमन के मार्गों की सुगमता और कृषि औद्योगिक विकास नीति आदि जनसंख्या का जमाव व जनसंख्या को घना करने में सहायक होते हैं। अध्ययन क्षेत्र की धरातलीय बनावट समतल है। इसके बीचो बीच टोंस नदी दक्षिण से पूर्व की ओर बहती है जो सतत् प्रवाहशील है। अध्ययन क्षेत्र समतल होने के कारण नदियों का मैदानी भाग होने के कारण जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

(ग) जलवायु : भौगोलिक कारकों में जलवायु का जनसंख्या वितरण पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, मनुष्य उन्ही भागों में रहना पसन्द करता है जहॉ की जलवायु उसके स्वास्थ्य तथा उद्योग के लिए अनुकूल हो। अध्ययन क्षेत्र की जलवायु अच्छी है। यहॉ की जलवायु गर्मी में अत्यन्त गर्म एवं ठण्डक में अत्यन्त ठण्डी है। अध्ययन क्षेत्र में मुख्यतः चार ऋतुऍ पायी जाती हैं–शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु एवं शरद ऋतु। अध्ययन क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में न्यूनतम तापमान 25.2^0C के लगभग व अधिकतम 34.3^0C तक रहता है। शीत ऋतु में यहॉ अधिकतम तापमान 20.85^0C तथा न्यूनतम तापमान 13.75^0C रहता है। यहॉ कभी–कभी जाड़े के दिनों में भी वर्षा होती है, जिसे गर्मी का मानसून कहते हैं। क्षेत्र की जलवायु मानव जीवन के अनुकूल होने के कारण जनसंख्या का वितरण अधिक पाया जाता है।

(घ) वनस्पति : वनस्पति न्यूनाधिक मात्रा में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करती है। अध्ययन क्षेत्र की प्राकृतिक छटा मनोरम है। प्राकृतिक दृष्टि से यहॉ वन क्षेत्र है। यहॉ आम, महुआ, जामुन, नीम, शीशम, बबूल, अमरूद, ऑवला, कटहल आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। स्थान–स्थान पर सुन्दर बाग बगीचे हैं। वन विभाग की ओर से वृक्षारोपण कराये जा रहे हैं। नहरों के किनारे यूकेलिप्टस, सागौन और कटीले जंगली बबूल और सड़कों के किनारे आम, पीपल, कटहल, नीम, शीशम आदि के वृक्ष लगे हैं। वन संरक्षण का कार्य काफी प्रगति पर है। वानिकी आदि के फलस्वरूप आरक्षित वन क्षेत्र की वनस्पतियों से वन सम्पत्ति का विकास किया गया है।

(च) मिट्टी : कृषि के लिए भूमि की उर्वरा शक्ति किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या को आकर्षित करती है। कृषि प्रधान देशों या क्षेत्रों में उपजाऊ मिट्टी पर मनुष्य खेती कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। किसी भी स्थान पर खेती प्रारम्भ होते ही वहॉ की जनसंख्या बढ़ने लगती है अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ की मिट्टी अधिक उपजाऊ है। क्षेत्र में सतत् प्रवाहित नदियों के कारण मध्य भाग में मिश्रित जलोढ़ मिट्टी का जमाव मिलता है और दोमट और मटियार मिट्टी पायी जाती है। न्याय

पंचायत आलापुर, चन्दनपुर, भटपुरवा, अरिया, सतरही सदरपुर आदि में उपजाऊ मिट्टी की गुणवत्ता अधिक होने के कारण यहॉ जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

(छ) जलापूर्ति : किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या का घनत्व वहॉ की जलापूर्ति की अवस्थाओं पर निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र में जल प्राप्ति की सुविधा परिपूर्ण है। यहॉं शुद्ध पेय जल की प्राप्ति आसानी से हो जाती है तथा कृषि हेतु नहर, नलकूप एवं तालाब द्वारा जल प्राप्त किया जाता है। अच्छी उपज के लिए सिंचाई के साधनों का काफी महत्व है, जितने अधिक व सुलभ साधन होगें, उतनी ही अधिक पैदावार होगी। मानव जीवन एवं फसलों का प्राण जल ही है। सिंचाई की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में टोंस नदी से निकाले गये नाले काफी उपयोगी है। बड़ी व छोटी नहरें बनाकर खेत की सिंचाई की जाती है। नहर से कुलाबें बजाकर पानी खेत तक ले जाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में मानसूनी व कभी–कभी चक्रवाती हवाओं से वर्षा होती है, जिससें खेती की सिंचाई हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र में भूमिगत जल स्तर की गहराई पृथ्वी की सतह से काफी समीप है, जिससें मानव अधिवास समीप–समीप दिखाई देते हैं। जलापूर्ति की पर्याप्त मात्रा में प्राप्ति के कारण अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वितरण सघन है।

मानवीय कारक :–मानव ज्ञान–विज्ञान, प्राविधिकी, जनशक्ति, सांस्कृतिक मूल्य, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक, वैचारिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों के आधार पर प्राकृतिक पर्यावरण में सांस्कृतिक भू–दृश्य का सृजन करता है, जो जनसंख्या वितरण को प्रभावित करता है। इसके निम्नलिखित मानवीय कारक हैं–

(क)ऐतिहासिक कारक :–किसी भी क्षेत्र की घनी जनसंख्या के बसाव में प्राचीनतम मानव सभ्यता का विशेष हाथ होता है किन्तु अम्बेडकरनगर जनपद की ऐतिहासिक घोषणा 29 सितम्बर 1995 को प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती जी ने इसी जनपद के एक पवित्र दर्शनीय स्थल शिवबाबा के मैदान में की थी। महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जी के नाम पर इस जनपद का नाम **अम्बेडकर नगर** रखा गया। विकास खण्ड अकबरपुर इसी जनपद का एक अंग है। यहॉं महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, जिसमें शिवबाबा, निम्सा बाबा मेला एवं श्रवण क्षेत्र। यहॉं के ऐतिहासिक कारक से जनसंख्या वितरण के घनत्व का वितरण बहुत ही प्रभावित है तथा यहॉं जनसंख्या वितरण सघन पाया जाता है।

(ख) धार्मिक कारक :–मनुष्य के आर्थिक जीवन की उन्नति के लिए जातीय गुणधर्म सामाजिक परम्पराऍ एवं शासन प्रबन्ध भी बड़ा सहयोग देते हैं। अध्ययन क्षेत्र में गॉंवों तथा नगरों में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख आदि धर्मो को मानने वाले लोग निवास करते हैं। इन सभी लोगों में आपस में सहिष्णुता का गुण पाया जाता है। ये सभी मिल–जुलकर एक दूसरे के धर्म एवं पूजा स्थलों का सम्मान करते हैं। यहॉं के लोग अपने–अपने धर्मो के अनुसार त्योहार एवं पर्व मनाते हैं।

(ग) राजनीतिक व्यवस्था एवं सुरक्षा :—मानव ऐसे स्थानों पर रहना पसन्द नहीं करता है, जहाँ उसके जीवन और सम्पत्ति की रक्षा न हो सके। शक्तिशाली और न्यायपूर्ण शासन जनसंख्या वितरण के घनत्व को प्रभावित करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में शासन व्यवस्था बहुत ही व्यवस्थित है। यहाँ हर क्षेत्र में अलग—अलग अधिकारी नियुक्त किये गये हैं—उपजिलाधिकारी, समाज कल्याण अधिकारी, चिकित्साधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक, खण्ड विकास अधिकारी, पंचायत राज्य अधिकारी, अर्थ एवं संख्याधिकारी। ये अधिकारी अपने—अपने क्षेत्र में अपना कार्य पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ निभाते हैं।

(घ) औद्योगिक विकास एवं आर्थिक विकास :—किसी भी स्थान पर पाये जाने वाले खनिज पदार्थो अथवा शक्ति के साधनों के विकास से औद्योगिक विकास होता है और औद्योगिक विकास के साथ ही जनसंख्या के भरण—पोषण में वृद्धि होती है तथा जनसंख्या के घनत्व में सघनता आती है। अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक दृष्टि से बहुत कम विकास हुआ है। प्रकृति की ओर से खनिज पदार्थों का अभाव है। केवल कंकड एवं रेत पाया जाता है, जिसके फलस्वरुप यहाँ पर लघु एवं कुटीर उद्योगों के रुप में हथकरघा उद्योग, कपड़ा उद्योग में पावरलूमों का विकास विकसित में हुआ है।

जनसंख्या घनत्व :—किसी क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या का क्या दबाव है इसका आकलन जनसंख्या घनत्व से लगाया जा सकता है। जनसंख्या घनत्व की गणना प्रति वर्ग किमी0 पर निवास करने वाली जनसंख्या से की जाती है। किसी क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की एक सीमा होती है। जनसंख्या इन संसाधनों के उपयोग को दर्शाती है। इससे प्रति व्यक्ति साधन, प्रति व्यक्ति आय तथा प्रति व्यक्ति स्तर का निर्धारण होता है। अतः किसी क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के प्रारुप का निर्धारण करने के लिए जनसंख्या घनत्व का अध्ययन करना आवश्यक है। इसकी निम्न विधियाँ हैं—

1.गणितीय घनत्व, 2. कृषि घनत्व 3. कायिक घनत्व

तालिका संख्या 3

भारत, उ0प्र0, अम्बेडकरनगर जनपद एवं अकबरपुर ब्लाक में अंकगणितीय जनसंख्या प्रतिरुप (1901—2001)

वर्ष	भारत	उ0प्र0	अम्बेडकर नगर	अकबरपुर
1901	77	165	200	130
1911	82	164	217	139
1921	81	169	222	158
1931	90	169	248	210
1941	103	192	275	245
1951	117	215	310	290
1961	142	251	360	340
1971	177	300	425	385
1981	216	370	540	410
1991	267	471	687	454
2001	324	689	854	785

स्रोत 1—सेंसस ऑफ इंण्डिया, 1991, 2—जिला जनगणना हस्त पुस्तिका, अम्बेडकर नगर—2001,

2001 की जनगणना के अनुसार अम्बेडकरनगर जनपद का अंकगणितीय घनत्व 854 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, उत्तर प्रदेश का 689 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है, जो भारत की 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से भी अधिक है। अध्ययन क्षेत्र अकबरपुर का अंकगणितीय घनत्व 785 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश की तुलना में डेढ़ गुना तथा देश की तुलना में दो गुना अधिक पाया जाता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में प्रदेश की तुलना में लगभग 168 तथा देश की तुलना में 309 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 अधिक लोग निवास करते हैं।

गणितीय घनत्व :—

किसी भू—भाग या क्षेत्र की कुल जनसंख्या को सम्पूर्ण क्षेत्रफल द्वारा विभाजित कर गणितीय या सामान्य जनसंख्या घनत्व ज्ञात किया जाता है। यह सामान्यीकृत मानव भूमि का अनुपात ज्ञान मात्र है।

गणितीय घनत्व = कुल जनसंख्या/कुल क्षेत्रफल

अंकगणितीय घनत्व कुल जनसंख्या एवं कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का अनुपात होता है, जो विश्व के अधिकांश भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रयोग किया जाता है, क्योंकि इसमें प्रयुक्त आंकडे आसानी से प्राप्त होते हैं। इन आंकड़ों के उपयोग करने में मुख्य कठिनाई यह है कि ये प्रशासनिक इकाईयों का प्रतिनिधित्व करते हैं, न कि भौगोलिक इकाईयों का। जनसंख्या वितरण की समानता बहुत कम देखने को मिलती है। जनसंख्या समूहों के रुप में पायी जाती है। इसमें अधिकांश भू—भाग पर मानव अधिवास नहीं मिलता है। जनसंख्या घनत्व मानचित्र निर्माण में बहुत कठिनाई होती है, क्योंकि इसका निर्माण वर्ग अन्तराल पर किया जाता है, तथा घनत्व की सघनता को छायांकन विधि से दिखाने के लिए छाया की सांद्रता का चुनाव करना भी एक कठिनाई है। इन सब आलोचनाओं के बाद भी जनसंख्या घनत्व किसी क्षेत्र विशेष में जनसंख्या वितरण सम्बन्धी विभिन्ताओं का विश्लेषण करने के लिए बहुत उपयोगी होता है।

तालिका संख्या 4

विकास खण्ड अकबरपुर का गणितीय घनत्व

क्र0सं0	न्याय पंचायत का नाम	क्षेत्रफल (हे0में)	घनत्व	
			1991	2001
1.	लालापुर	3167.00	534	282
2.	चाँदपुर भटपुरवा	1944.19	645	786
3.	अरिया	2293.01	755	926
4.	सतरडी	1211.70	653	1137
5.	रामनगर नरसिंहपुर	1968.04	542	421
6.	अफजलपुर	2299.50	683	923
7.	सदरपुर	2603.84	662	1088
8.	बहोरिकपुर	1814.69	639	8870
9.	सोनगाँव	2211.28	542	881
10.	रामपुर सकरवारी	1558.48	769	696
11.	कुरचा	2258.24	538	740
12.	बेवाना	2948.25	546	692
13.	चन्दनपुर	2363.03	534	697
14.	सैंदापुर	2412.41	578	956
15.	जल्लापुर मसेढा	1942.51	690	840
16.	बरियावन	1678.99	615	736
17.	नैली	2085.81	645	827
18.	ताराखुर्द	2965.55	524	904

स्रोत— राष्ट्रीय सूचना एवं विज्ञान केन्द्र उ0प्र0राज्य एक जनगणना हस्तपुस्तिका 1991